माध्यमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण में परंपरागत शिक्षण विधि एवं परियोजना शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन

प्रो0 धनन्जय यादव*

अशोक कुमार*

सारांश–एक समग्र प्रक्रिया के रूप में शिक्षण को समझा जा सकता हैं। जो सीधे बालक के विकाश से सीधा सम्बन्ध रखती हैं। शिक्षण अपने आप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष देश के विकाश से जुडा हुआ है। जिसका मूल उद्देश्य समाज की आवश्यकता के अनूरूप बालक को तैयार करना है। जो राष्ट्र के निर्माण में सहयोग प्रदान कर सके। भूगोल एक ऐसा विषय है जो बालक को राष्ट्र की विविधता एवं उसकी आवश्यकता व्यवहारिक रूप मे समझाने मे अपना अमूल्य योगदान दे सकता है। साथ ही साथ वह उत्पादन प्रकृया का हिस्सा बनकर देश के विकाश में योगदान दे सकता है। विकशित देशो की अपेक्षा विकासशील देशो मे भूगोल शिक्षण को वह स्थान अभी नही प्राप्त हो सका है। परन्तु हाल के वर्षो में इस दिशा में प्रयास किया जा रहा है। यह प्रश्न कि क्या भूगोल शिक्षण मे प्रयुक्त होने वाली शिक्षण विधियॉ समान रूप से प्रभावशाली है ?